IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# "भारतीय परिवार एवं विवाह संस्था पर वैश्वीकरण का प्रभाव" एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

**डा0 बबिता**

असिस्टेंट प्रोफेसर (Temporary), समाजशास्त्र विभाग,राजा महेन्द्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, अलीगढ़।

## शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य वर्तमान में भारतीय परिवार एवं विवाह संस्था पर पड़ने वाले वैश्वीकरण के प्रभाव को दर्शाना है। वर्तमान में वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभावों के कारण विवाह के धार्मिक स्वरूप एवं मूल्यों में तीव्र गति से परिवर्तन देखने को मिले हैं जोकि भारतीय संस्कृति की गरिमा को आहत कर रहे हैं। विवाह के स्वरूप में आये बदलाव की वजह से जो लिव–इन–रिलेशनशिप की अवधारणा विकसित हुई है यह विवाह संस्था पर वैश्वीकरण के प्रभावों की पराकाष्ठा को दर्शाती है।

वैश्विक संस्कृति के कारण लोग संयुक्त परिवार के स्थान पर एकांकी परिवार की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं, जिसके परिणाम स्वरूप लोग स्वार्थ भावना से ग्रसित हो रहे हैं। संयुक्त परिवार के विघटित होने के कारण बच्चों के पालन–पोषण में अनेक कठिनाईयां देखने को मिली हैं व बच्चों में नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है जो वैश्विक संस्कृति के प्रभाव को दर्शाता है।

**मुख्य शब्द**–वैश्वीकरण, भारतीय परिवार, विवाह संस्था।

**प्रस्तावना**–वैश्वीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है। वैश्वीकरण का इतिहास तीन दशक से अधिक पुराना नहीं है, इसका आरम्भ 80 के दशक के बाद से माना जाता है। कुछ विद्धान वैश्वीकरण का अर्थ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक आदान–प्रदान से मानते हैं तथा कुछ विद्धान इसके सन्दर्भ में यह मानते हैं कि यह सिर्फ आर्थिक आदान–प्रदान ही नहीं बल्कि यह सम्पूर्ण सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक क्रिया कलापों के आदान–प्रदान से भी सम्बंधित है।

मैक्लुहन ने (1964) में इस शब्द का प्रयोग "विश्व ग्राम" के लिए किया था। सूचना एवं संचार के माध्यमों के आविष्कार से पहले ही उन्होंने पूरे विश्व को एक सूत्र में बाँधने की बात की थी। वैश्वीकरण की अवधारणा का विश्लेषण करने का श्रेय ऐन्थनी गिडेन्स को जाता है। गिडेन्स ने अपनी पुस्तक "द कॉन्सीक्वेंन्सिस ऑफ मॉडर्निटी (1990)" में वैश्वीकरण की परिभाषा प्रस्तुत की थी, "विभिन्न लोगों एवं विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य बढ़ती हुयी पारस्परिकता के कारण आज पूरा विश्व एक 'विश्व ग्राम' में परिवर्तित हो रहा है जिससे आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक क्रिया–कलापों के आदान–प्रदान करने की प्रक्रिया सम्भव हुयी है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया का प्रभाव भारतीय विवाह एवं परिवार संस्थाओं पर भी देखने को मिला है। वर्तमान में वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभावों के कारण विवाह के धार्मिक स्वरूप एवं मूल्यों में तीव्र गति से परिवर्तन देखने को मिले हैं। अब विवाह के स्वरूपों में अनूलोम–प्रतिलोम विवाह, लव मैरिज एवं लिव–इन–रिलेशनशिप जैसे विवाहों को अनुमति प्रदान हो रही है जोकि भारतीय संस्कृति की गरिमा को आहत कर रही है। विवाह के स्वरूप में आये इन बदलावों की वजह से जो लिव–इन–रिलेशनशिप की अवधारणा विकसित हुई है यह विवाह संस्था पर वैश्वीकरण के प्रभावों की पराकाष्ठा को दर्शाती है। विवाह के साथ–साथ परिवार नामक संस्था पर भी इन परिवर्तनों का प्रभाव देखने को मिला है। परिवार को समाज की सबसे छोटी इकाई माना जाता है इससे ही समाज का अस्तित्व सामने आया है। विवाह को परिवार नामक संस्था में प्रवेश कराने की एक विधि के रूप में भी माना जाता है जोकि एक धार्मिक संस्कार के रूप में माना जाता है।

विवाह के बाद ही परिवार का निर्माण होना सम्भव है। वर्तमान में वैश्वीकरण की प्रक्रिया के कारण जहाँ विवाह के मूल्यों एवं स्वरूप में परिवर्तन देखने को मिले हैं, वहीं परिवार नामक संस्था पर भी इसके प्रभाव को देखा जा सकता है। प्राचीन में संयुक्त परिवार होते थे व उनका महत्व होता था लेकिन आज संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवारों ने ले ली है। यह वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव को दर्शाती है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने औद्योगीकरण की प्रक्रिया को तीव्र कर दिया है जिससे नगरीयकरण का विकास हो रहा है और लोग नगरीयकरण से आकर्षित होकर संयुक्त परिवार को छोड़कर एकांकी परिवार को महत्व दे रहे हैं जिससे संयुक्त परिवार विघटित होकर एकांकी परिवार में परिवर्तित हो गये हैं। इन सभी प्रक्रियाओं से परिवार के स्वरूप में परिवर्तन के साथ–साथ बच्चों के पालन–पोषण एवं शिक्षा पर पड़ रहे प्रभावों को भी देखा जा सकता है।

डा0 संजीव कुमार प्रभाकर (2019) के अनुसार ग्लोबल संस्कृति के कारण लोग संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार की ओर से तेजी से बढ़ रहे हैं। जिसके परिणाम स्वरूप लोग स्वार्थ भावना से ग्रसित हो रहे हैं। वैश्विक संस्कृति के कारण संयुक्त परिवार आज टूट रहे हैं। संयुक्त परिवार में बड़ों का आदर सम्मान होता था जो आज वैश्विक संस्कृति के कारण घट रहा है, इतना ही नहीं संयुक्त परिवार में बच्चों के लालन–पालन की प्रक्रिया पूर्णरूप से सम्भव हो पाती थी लेकिन आज संयुक्त परिवार के टूटने के कारण बच्चों के पालन–पोषण में कठिनाईयाँ देखने को मिली हैं व बच्चों मैं नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है जो वैश्विक संस्कृति के प्रभाव को दर्शाता है। इतना ही नहीं इन सभी प्रक्रियाओं के कारण आज पति–पत्नी के रिश्ते में भी परिवर्तन देखने को मिलते हैं जिस कारण पति–पत्नी में आपसी समंजस्य का अभाव पाया जाता है। फलस्वरूप विवाह–विच्छेद की संख्या में वृद्धि हो रही है जिसके कारण बच्चों के समाजीकरण की समस्या भी उत्पन्न होती जा रही है।

वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसने हमारे सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित किया है। इसने हमारे दैनिक जीवन पर सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही तरह से प्रभाव डाला है।

**उद्देश्य–**

1–भारतीय परिवार पर वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2–भारतीय विवाह संस्था पर वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

**शोध पद्धति–** प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है। शोध पत्र में तथ्यों के संकलन के लिये द्वितीयक श्रोतों शोध पत्र, पत्रिकाओं, शोध प्रबंध, इन्टरनेट पर उपलब्ध सामग्री एवं पुस्तकों आदि का उपयोग किया गया है।

**साहित्य समीक्षा–**

**ऐन्थनी गिडिन्स (1990)**, "द कॉन्सीक्वेन्सिस ऑफ मॉडर्निटी"– मनुष्य एवं विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य बढ़ती हुयी पारस्परिकता ही वैश्वीकरण है। वैश्वीकरण के कारण आज ऐसे सम्बन्धों का विस्तार हुआ है जो दूर दराज में रहने वाले लोगों को भी इस प्रकार जोड़ता है कि उनमें होने वाली घटना का प्रभाव सभी क्षेत्रों में दिखाई पड़ता है। अगर किसी क्षेत्र में कोई घटना घटित होती है तो उसका प्रभाव अन्य क्षेत्रों पर भी देखने को मिलता है। वैश्वीकरण सभी क्षेत्रों में

अन्तर्निभरता एवं पारस्परिकता की स्थिति को उत्पन्न करता है। इसी बढ़ती हुयी पारस्परिकता के कारण आज पूरा विश्व एक "विश्व ग्राम" में परिवर्तित हो रहा है।

**डी एन मजूमदार (1997)**, "द फॉर्च्यून ऑफ प्रिमिटिव ट्राइब्स बम्बई"– पुस्तक में लेखक ने "विवाह के उद्देश्य का उल्लेख किया है जिसमें बच्चों का पालन–पोषण, यौन संतुष्टि और आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना है"। लेकिन वर्तमान युग में विवाह के उद्देश्यों में परिवर्तन आया है। आज विवाह को मित्रता एवं सहयोग की प्राप्ति की दृष्टि से देखा जाता है। भारत में प्राचीन काल से ही विवाह के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन देखने को मिले हैं किन्तु वर्तमान में भारत में विवाह के कई स्वरूप देखने को मिले हैं जिसमें एक विवाह, अन्तःजातीय विवाह, अनुलोम–प्रतिलोम विवाह आदि सम्मिलित हैं जिनसे भारत की हिन्दू विवाह संस्था में परिवर्तन हुए हैं जो वैश्विक संस्कृति का परिणाम हैं।

**माल्कॉम वाटर्स (2001)**, "ग्लोबलाइजेशन"– के अनुसार "वैश्वीकरण वह सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था है जिस पर कोई भौगोलिक दबाव नहीं है।" यह वह प्रक्रिया है जो किसी भी देश की भौगोलिक सीमाओं को शिथिलता प्रदान करती है। भौगोलिक सीमाओं में रहने वाले लोगों को किसी भी दबाव एवं प्रतिबन्ध की अनुभूति नहीं होती। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने सभी देशों की भौगोलिक सीमाओं को तोड़ कर आज पूरे विश्व को एक ऐसे सामाजिक संबंधों में बांध दिया है जो पूर्ण रूप से स्वतंत्र हैं इन पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं है। इन्हीं संबंधों की भौगोलिक शिथिलताओं को वाटर्स ने नई व्यवस्था कहा है जिनमें क्षेत्रीय प्रतिबद्धताएं नहीं हैं।

**अर्जुन अप्पादुराई (2001)**, "डिस्जंक्चर एण्ड डिफरेंस इन द ग्लोबल कल्चरल इकॉनोमी"– के अनुसार "दूर–दूर तक फैलने वाले संबंधों से बनने वाली आकृतियाँ नई आकृतियाँ हैं।" जिसको हम वैश्वीकरण के नाम से जानते हैं। कुछ समय पूर्व संचार के साधानों की कठिनाईयों के कारण वैश्वीकरण की प्रक्रिया धीमी थी लेकिन आज संचार की सुविधाओं के कारण एक देश से दूसरे देश के मध्य सम्पर्क बनाने की प्रक्रिया सरल हुयी है। लेखक "वैश्वीकरण को एक सांस्कृतिक प्रवाह के जैसे मानते हैं।" वैश्वीकरण के कारण आज विभिन्न देशों के मध्य सांस्कृतिक आदान–प्रदान में तीव्र वृद्धि हुई है, जिससे नई–नई संस्कृतियों का जन्म एवं विकास हुआ है।

**डॉ0 उपासना, डॉ0 किरन डंगवाल (2013)**, "वैवाहिक एवं पारिवारिक मूल्यों पर व्यावसायिक शिक्षा का प्रभाव"– में लेखक ने रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज से 150 युवतियों का दैव निदर्शन की लॉटरी विधि द्वारा अध्ययन कर पाया कि "वर्तमान समय में शिक्षा संबंधी सुविधाओं, भौतिकवादी संस्कृति, अपनत्व की कमी, महिलाओं के अधिकारों में वृद्धि एवं स्वतंत्रता की भावना के कारण परिवार के स्वरूपों में परिवर्तन हुआ है।" वर्तमान में हुए इस परिवर्तन के कारण एकांकी परिवार के स्वरूप में वृद्धि हो रही है। वर्तमान में एकांकी परिवार का महत्व इसलिए भी है क्योंकि इसमें सभी को स्वतंत्रता प्राप्त होती है और आज की युवा पीढ़ी स्वतंत्रता प्रिय है जिसे बंधन में बंधना पसंद नहीं है। संयुक्त परिवार में शक्ति एक मुखिया के हाथ में होती थी जिससे व्यक्ति स्वतंत्र महसूस नहीं करता जिस कारण आज समाज में संयुक्त परिवार का विघटन देखने को मिलता है। औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं वैश्वीकरण के फलस्वरूप विवाह एवं परिवार में अनेक परिवर्तन देखने को मिलते हैं जिसमें अन्तर्जातीय विवाह का प्रचलन, विलम्ब विवाह, विवाह का निर्णय युवक एवं युवतियों द्वारा स्वयं लिया जाना प्रमुख है।

**गगनप्रीत कौर (2013)**, "भारतीय समाज में विवाह के स्वरूप बदल रहे हैं"– लेखिका ने लुधियाना क्षेत्र का अध्ययन कर पाया कि "जिस तरह से सामाजिक घटनाओं में परिवर्तन हो रहे हैं उसी प्रकार विवाह संस्थाओं में भी परिवर्तन देखने को मिले हैं।" भारतीय विवाह संस्था में यह परिवर्तन प्रत्येक समाज के सभी वर्गों में देखे जा सकते हैं। वर्तमान युग में आधुनिकरण, नगरीकरण, वैश्वीकरण आदि के कारण ऐसी सामाजिक घटनाऐं देखने को मिली हैं जोकि भारतीय समाज का हिस्सा नहीं हैं पर वर्तमान आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल हैं। जिसके कारण भारतीय विवाह संस्था के पारम्परिक स्वरूप में परिवर्तन देखने को मिले हैं। भारतीय विवाह संस्था पर आधुनिकरण, वैश्वीकरण के प्रभावों को लिव–इन–रिलेशन, लव मैरिज, अदर कास्ट मैरिज आदि के रूप में देखा जा सकता है। वर्तमान में विवाह संस्था अपने पारम्परिक रूप को त्याग कर आधुनिकरण के रंग में रंग गयी है।

**कु0 नीतू सिंह (2013)**, "वैश्वीकरण एवं सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन"– के अनुसार "वैश्वीकरण वर्तमान समय में व्यापारिक और औद्योगिक क्षेत्र की ऐसी अवधारणा है जो पूरे विश्व को एक मण्डल या एक केन्द्र बनाने की बात करता है।" वैश्वीकरण ने जहाँ अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को सुगम बनाया है वहीं इसके कारण विकासशील एवं अविकसित देशों को कई कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ा है। इन कठिनाईयों में विदेशी मुद्रा की समस्या, बेरोजगारी, निर्धनता, सामाजिक कुरीतियाँ आदि हैं। वैश्वीकरण के आने से मशीनीकरण को बढ़ावा मिला है जिससे बेरोजगारी में वृद्धि की समस्या उत्पन्न हुई है। लेखिका के अनुसार "वैश्वीकरण ने लघु एवं कुटीर उद्योगों के लिए चुनौतियाँ पैदा की हैं जिससे अप्रशिक्षित श्रमिक बेरोजगारों की संख्या में वृद्धि हुई है।"

**इश्डेईप कौर (2015)**, कान्यकुब्ज के विवाह पैटर्न में बदलाव"– लेखिका ने सीतापुर जिले के कन्याकुब्ज ब्राह्मणों का अध्ययन कर पाया कि इनकी विवाह संस्था में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे हैं। लेखिका का उद्देश्य भारतीय विवाह संस्था में हो रहे परिवर्तनों को दर्शाना था जिसके लिए उन्होंने कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का अध्ययन किया। इस अध्ययन में कौर ने 25 उत्तरदाताओं का चयन किया और पाया कि "शिक्षा के स्तर में वृद्धि, औद्योगीकरण, आधुनिकरण आदि के कारण कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की विवाह संस्था के नियमों में बदलाव हो रहे हैं।" विवाह आयु में परिवर्तन, अनुष्ठानों में परिवर्तन, जीवन साथी का चयन करने की स्वतंत्रता, दहेज की राशी में परिवर्तन आदि बदलाव देखने को मिलते हैं जिनसे इनकी विवाह संस्था एवं सांस्कृतिक जीवन में परिवर्तन हो रहे हैं।

**डा0 मनीता चौकसे (2015)**, "वैश्वीकरण की प्रक्रिया का भारतीय समाज पर प्रभाव विश्लेषणात्मक अध्ययन"– के अनुसार "विकासशील देशों में यह चिंता का विषय है कि वैश्वीकरण के आर्थिक लाभ मिले न मिले इसके सांस्कृतिक एवं सामाजिक दुष्परिणाम उन्हें झेलने पड़ते हैं।" भारत एक विकासशील देश है जिसकी अधिकतर जनसंख्या गाँव में निवास करती है अतः वैश्वीकरण के कारण भारत की नगरीय ही नहीं बल्कि ग्रामीण जनसंख्या पर भी सांस्कृतिक एवं सामाजिक दुष्परिणाम देखने को मिले हैं, इन दुष्परिणामों में परिवारों के विघटन की प्रक्रिया, विवाह के धार्मिक स्वरूप में बदलाव, मूल्यों एवं नैतिक कर्तव्यों के पतन आदि देखने को मिले हैं जोकि भारत देश की संस्कृति का आधार माने जाते हैं। वर्तमान में वैश्वीकरण की प्रक्रिया के कारण भारतीय संस्कृति में तीव्र परिवर्तन देखने को मिले हैं जोकि भारतीय समाज पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं।

**लाला राम मीणा (2017)**, "भूमण्डलीकरण : भारतीय समाज"– के अनुसार "विदेशी कंपनियों और घरेलू कंपनियों के बीच भारतीय बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है।" जिसे असमानता के रूप में देखा जा सकता है। विदेशी वस्तुओं की खरीदारी आज भारतीय वस्तुओं की तुलना में अधिक हो रही है जिसके कारण भारतीय उद्योगों पर वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया से बड़ी कंपनियों एवं विदेशी कंपनियों को लाभ एवं भारतीय लघु उद्योगों को हानि पहुँची है जिससे भारतीय उद्योगों एवं बाजार में असमानता देखी जा सकती है जिसके कारण अनेक समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। वैश्वीकरण को भारत में लाने का उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था को उच्च स्तर पर लाने का था जोकि नहीं हुआ। वर्तमान में भारतीय बाजार पर अन्तर्राष्ट्रीय कंपनियों का आधिपत्य है जिसने भारत के लघु उद्योगों को नष्ट कर दिया है, एवं स्वयं लाभ कमाने के पथ पर अग्रसर है।

**रीना आर्य (2018)**, "वैश्वीकरण का विवाह संस्था पर प्रभाव : एक आनुभाविक अध्ययन"– लेखिका के अनुसार "नगरीयकरण, पश्चिमीकरण एवं वैश्वीकरण के कारण भारतीय समाज में विवाह के स्वरूप तथा वैवाहिक सम्बंधों को 'लिव–इन–रिलेशनशिप' तक ला दिया है।" आज के युग में ज्यादातर युवा लिव–इन–रिलेशनशिप को अपनाने के लिए सहमत हैं, जिसके कारण समाज में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। भारतीय संस्कृति में हिन्दू विवाह एक धार्मिक संस्कार है जिसे सभी स्वीकार करते हैं। लिव–इन–रिलेशन के आने से भारतीय विवाह का स्वरूप बदल रहा है जोकि भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों को आहत कर रहा है। वैश्वीकरण ने भारतीय विवाह संस्था पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। आज विवाह धार्मिक स्वरूप न होकर समझौता बनकर रह गया है जोकि भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण के प्रभाव को दर्शाता है।

**डॉ0 संजीव कुमार प्रभाकर (2019)**, "वैश्विक संस्कृति का भारत पर प्रभाव"– लेखक के अनुसार "ग्लोबल संस्कृति के कारण लोग संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं।" परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई होती है। भारत के प्रारम्भ से ही संयुक्त परिवार का महत्व देखने को मिला है लेकिन आज वैश्विक–संस्कृति या वैश्वीकरण के प्रभाव से इसके स्वरूप में बदलाव हो रहे हैं। संयुक्त परिवार एकांकी परिवार में विघटित हो रहे हैं तथा परिवार के मुखिया की स्थिति में परिवर्तन हो रहा है। पहले घर का बड़ा व्यक्ति मुखिया होता था, आज अधिक कमाने वाले व्यक्ति घर के मुखिया होते हैं। एकांकी परिवार में बच्चों के पालन–पोषण की समस्या उत्पन्न हो रही है जोकि संयुक्त परिवार में नहीं थी। वैश्विक संस्कृति के कारण आज बच्चों में नैतिक मूल्यों का भी ह्रास हो रहा है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने परिवार रूपी संस्था को भी बहुत प्रभावित किया है जिससे परिवार के स्वरूप में तेजी से बदलाव देखने को मिले हैं।

**निष्कर्ष**–वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। वैश्वीकरण के कारण ही संयुक्त परिवार एकांकी परिवार में विघटित हो रहे हैं एवं मुखिया के अधिकारों में परिवर्तन हो रहे हैं। वैश्वीकरण के कारण विवाह जैसी धार्मिक संस्था भी संक्रमित हो अरेंज मैरिज की जगह लव मैरिज एवं लिव–इन–रिलेशनशिप में परिवर्तित हो रही है। वैश्वीकरण ने भारतीय परिवार एवं विवाह संस्था में एक संक्रमण की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी है जिससे हमारी भारतीय संस्कृति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। वर्तमान समय में विवाह नामक संस्था तेज दर से टूट रही है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने आज भारत में एकांकी परिवार, वृद्धाश्रम, अस्थाई विवाह, बड़ों के प्रति अनादर, नैतिक मूल्यों में ह्रास आदि समस्याओं को उत्पन्न किया है जो भारतीय संस्कृति को प्रभावित कर रही है। भारतीय संस्कृति पूरे विश्व में अपनी शालीनता के लिए प्रसिद्ध है किन्तु वर्तमान में वैश्वीकरण से प्रभावित होकर नष्ट हो रही है।

वर्तमान में वैश्वीकरण को आर्थिक पहलू की दृष्टि से अपनाने की आवश्यकता भी है लेकिन इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया से क्या ग्रहण किया जाये और क्या नहीं ताकि भारतीय समाज पर वैश्वीकरण या वैश्विक संस्कृति का प्रभाव ना पड़े और जिससे हमारी भारतीय संस्कृति की गरिमा बनी रहे।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–**


- गिडेन्स, ऐन्थनी (1990), "द कॉन्सीक्वेन्सिस ऑफ मॉडर्निटी".
- मजूमदार, डी एन (1994), "द फॉर्च्यून ऑफ प्रिमिटिव ट्राइब्स बम्बई".
- वाटर्स, माल्कॉम (2001), "ग्लोबलाइजेशन".
- अप्पादुराई, अर्जुन (2001), "डिस्जंक्चर एण्ड डिफरेंस इन द ग्लोबल कल्चरल इकॉनोमी".
- डॉ0 उपासना, डॉ0 डंगवाल, किरन (2013), "वैवाहिक एवं पारिवारिक मूल्यों पर व्यावसायिक शिक्षा का प्रभाव", शोध संचयन, वॉल्यूम–4, इस्यू–1, पेज नं0–5.
- कौर, गगनप्रीत (2013), "भारतीय समाज में विवाह के स्वरूप बदल रहे हैं", इंडियन जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स एण्ड डवलपमेंट.
- कु0 सिंह, नीतू (2013), "वैश्वीकरण एवं सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन", (वाराणसी जनपद के विशेष सन्दर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन), पेज नं0– 2,4.
- कौर, इश्डेईप (2015), "कन्याकुब्ज के विवाह पैटर्न में बदलाव", इंटरनेशन जर्नल ऑफ सोशल साइंस एण्ड इंटरडिसीप्लिनरी रिसर्च.
- डा0 चौकसे, मनीता (2015), "वैश्वीकरण की प्रक्रिया का भारतीय समाज पर प्रभाव विश्लेषणात्मक अध्ययन", इंडियन जर्नल ऑफ अप्लाइड रिसर्च, वॉल्यूम– 5, इस्यू– 9, पेज नं0– 170.
- मीणा, लाला राम (2017), "भूमण्डलीकरण : भारतीय समाज", श्रंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, वॉल्यूम–4, इस्यू–5, पेज नं0– 58.
- आर्य, रीना (2018), "वैश्वीकरण का विवाह संस्था पर प्रभाव : एक आनुभाविक अध्ययन", स्कॉलर्ली रिसर्च जर्नल फॉर इंटरडिसीप्लिनरी स्टडीज, वॉल्यूम– 6, पेज नं0– 46.
- डॉ0 प्रभाकर, संजीव कुमार (2019), "वैश्विक संस्कृति का भारत पर प्रभाव", वॉल्यूम–4, इस्यू–7.